JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता. गेवराई जि. बीड)

छंद की परिभाषा

छंद के तत्व

छन्दों के भेद

मात्रिक छन्द

वर्णिक-छन्द

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

हिंदी विभागाध्यक्ष

छंद की परिभाषा

जब मात्रा अथवा वर्णों की संख्या, विराम, गति, लय तथा तुक आदि के नियमों से युक्त कोई रचना होती है, उसे छन्द अथवा पद्य कहते हैं, इसी को वृत्त भी कहते हैं ।

जिस काव्य में वर्ण और मात्रा-गणना, यति (विराम) एवं गति का नियम तथा चरणान्त में समता हो, उसे 'छंद' कहते हैं।

'हिंदी साहित्य कोश' के अनुसार- "अक्षर, अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा, मात्रा-गणना तथा यति-गति आदि से संबंधित विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्‌ध-रचना 'छन्द' कहलाती है।

छन्द जिस रचना में मात्राओं और वर्णों की विशेष व्यवस्था तथा संगीतात्मक लय और गति की योजना रहती है, उसे 'छन्द' कहते हैं।

ऋग्वेद के पुरुषसूक्त के नवम् छन्द में 'छन्द' की उत्पत्ति ईश्वर से बताई गई है। लौकिक संस्कृत के छम्दों का जन्मदाता वाल्मीकि को माना गया है। आचार्य पिंगल ने 'छन्दसूत्र' में छन्द का सुसम्बद्‌ध वर्णन किया है, अत: इसे छन्दशास्त्र का आदि ग्रन्थ माना जाता है। छन्दशास्त्र को 'पिंगलशास्त्र' भी कहा जाता है। हिन्दी साहित्य में छन्दशास्त्र की दृष्टि से प्रथम कृति 'छन्दमाला' है। छन्द के संघटक तत्त्व आठ हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है-अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रागणना तथा यति-गति से संबद्‌ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्‌यरचना **'छंद' (chhand)** कहलाती है। **'छंद'** की प्रथम चर्चा **'ऋग्वेद'** में हुई है। यदि गद्‌य का नियामक व्याकरण है, तो कविता का **छंदशास्त्र**। छंद पद्‌य की रचना का मानक है और इसी के अनुसार पद्‌य की सृष्टि होती है। पद्‌यरचना का समुचित ज्ञान **'छंदशास्त्र'** का अध्ययन किए बिना नहीं होता। छंद हृदय की सौदर्यभावना जागरित करते है। छंदोबद्‌ध कथन में एक विचित्र प्रकार का आह्लाद रहता है, जो आप ही जगता है। तुक **छंद** का प्राण है- यही हमारी आनंद-भावना को प्रेरित करती है। गद्‌य में शुष्कता रहती है और **छंद** में **भाव की तरलता**। यही कारण है कि गद्‌य की अपेक्षा छंदोबद्‌ध पद्‌य हमें अधिक आनंद देता है।

छंद के तत्व छंदों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए छंदों के विषय में जानना परम आवश्यक है। छंदों के मुख्य तत्व इस प्रकार हैं-

1.वर्ण मुख से निकलने वाली ध्वनि को सूचित करने के लिए निश्चित किये गए चिन्ह 'वर्ण' कहलाते हैं। वर्ण दो प्रकार के होते हैं- ह्रस्व (लघु) और दीर्घ (गुरु)।

ह्रस्व (लघु)- वर्ण मात्रा-गणना की प्रमुख इकाई है। लघु वर्ण एक मात्रिक होता है; यथा- अ, इ, उ, क, कि, कु। और लघु का चिन्ह '।' है। दो लघु वर्ण मिलाकर एक गुरु के बराबर माने जाते हैं।

दीर्घ (गुरु)- दीर्घ वर्ण ह्रस्व या लघु की तुलना में दुगनी मात्रा रखता है। दीर्घ वर्ण के लिए 'ऽ' चिन्ह प्रयुक्त होता है।

2.मात्रा वर्ण के उच्चारण में जो समय व्यतीत होता है, उसे 'मात्रा' कहते हैं। लघु वर्ण की एक मात्रा मानी जाती है। गुरु वर्ण के उच्चारण में उससे दुगना समय लगता है, अतः इसकी दो मात्राएँ मानी जाती हैं।

3. गति– पढ़ते समय कविता के स्पष्ट सुखद प्रवाह को गति कहते हैं।

4.यति– छंदों में विराम या रुकने के स्थलों को यति कहते हैं।

5.तुक– छंद के चरणों के अंत में एक समान उच्चारण वाले शब्दों के आने से जो लय उत्पन्न होती है, उसे 'तुक' कहते हैं।

शुभाक्षर– शुभाक्षर 15 हैं- क, ख, ग, घ, च, छ, ज, द, ध, न, य, श, स, क्ष, ज्ञ।

अशुभाक्षर– इन्हें 'दग्धाक्षर' भी कहते हैं। दग्धाक्षरों की कविता के प्रारंभ में नहीं रखना चाहिए। ये अक्षर इस प्रकार हैं- ङ, झ, ञ, ट, ड. ढ, ण, त, थ, ब, भ, म, र, ल, ब, ष, ह। आवश्यकतानुसार इनके दोष-परिहार का भी विधान है।

6. वर्णित गण– वर्णित वृत्तों में वर्णों की व्यवस्था तथा गणना के लिए तीन-तीन वर्णों के गण-समूह बनाए गए हैं।, इन्हें ही 'वर्णित गण' कहते हैं। इनकी संख्या आठ है।

छंद के अंग कितने हैं | chhand ke ang

(1) चरण / पाद / पद चरण छन्द कुछ पंक्तियों का समूह होता है और प्रत्येक पंक्ति में समान वर्ण या मात्राएँ होती हैं। इन्हीं पंक्तियों को 'चरण' या 'पाद' कहते हैं। प्रथम व तृतीय चरण को 'विषम' तथा दूसरे और चौथे चरण को 'सम' कहते हैं। किसी छन्द का लक्षण जितने वाक्य अथवा वाक्यांश में एक बार पूरा घटित होता है, उसे उसका एक 'चरण' कहते हैं । विशेष-(a) प्रत्येक छन्द में चरणों की संख्या भी निश्चित होती है। (b) पहले और तीसरे चरण को विषम चरण तथा दूसरे और चौथे चरण को सम चरण कहते हैं।

(2) दल अधिकतर छन्दों में एक चरण एक पंक्ति में लिखा तथा पढ़ा जाता है। कुछ छन्दों में दो-दो चरण मिलाकर एक पंक्ति में लिखे जाते है । दो चरणों से मिली हुई एक पंक्ति को एक 'दल' कहते हैं।विशेष-चार चरणों वाले छन्द में दो दल बन जाते हैं-

प्रथम दल = प्रथम चरण + द्वितीय चरण

द्वितीय दल = तृतीय चरण + चतुर्थ चरण

(3) गति / लय गति 'गति' का अर्थ 'लय' है। छन्दों को पढ़ते समय मात्राओं के लघु अथवा दीर्घ होने के कारण जो विशेष स्वर लहरी उत्पन्न होती है, उसे ही 'गति' या 'लय' कहते हैं। छन्दों में मधुरता लाने के लिए एक प्रकार का प्रवाह होना आवश्यक है। गति या प्रवाह से हमारा तात्पर्य लयपूर्ण पाठ-प्रवाह से है जिससे पढ़ने में किसी प्रकार की रुकावट न हो। कविता के प्रवाह को ही गति कहते हैं। उदाहरण के लिए जब हम पढ़ते हैं- भू में रमी शरद की कमनीयता थी तब पढ़ने (बोलने) में उच्चारण के अवयवों जिह्वा, ओष्ठ आदि को कोई रुकावट नहीं होती किन्तु यदि इसी को-शरद की कमनीयता भू में रमी थी'-ऐसा कर दिया जाये तो पढ़ने में रुकावट आती है (इस रुकावट का स्वयं बोलकर अनुभव किया जा सकता है)। इस प्रकार की रुकावट से प्रवाह भंग हो जाता है और बह उक्ति गतिहीन हो जाने से 'पद्य कहलाने की अधिकारिणी नहीं रह जाती।

(4) यति / विराम यति छन्दों को पढ़ते समय बीच-बीच में कुछ रुकना पड़ता है। इन्हीं विराम स्थलों को 'यति' कहते हैं। सामान्यतः छन्द के चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण के अन्त में 'यति' होती है। किसी छन्द के चरण को पढ़ते समयं बीच में जहाँ कहीं रुक कर विश्राम किया जाता है, उसे यति कहते हैं। चरण के बीच में जहाँ थोड़ी देर रुका जाता है, वहाँ " , " चिह्न और चरण के अन्त में जहाँ कुछ अधिक देर रुका जाता है, वहाँ '।' चिह्न लगाया जाता है।

(5) मात्रा

मात्रा वर्गों के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे 'मात्रा' कहते हैं। लघु वर्णों की मात्रा एक और गुरु वर्णों की मात्राएँ दो होती हैं। लघु को तथा गुरु को 5 द्वारा व्यक्त करते हैं। वर्णों के उच्चारण काल को मापने की सबसे छोटी इकाई मात्रा है। किसी स्वर का उच्चारण करने में जितना समय लगता है, उसे एक मात्रा काल कहते हैं । मत्त, कला और कल - ये सब मात्रा के ही नाम हैं।

छन्द शास्त्र में मात्रा

स्वर हो या व्यंजन, सभी वर्णों के उच्चारण में समय लगता है। व्याकरण शास्त्र के अनुसार प्रत्येक व्यंजन का उच्चारण अंद्द्धमात्रा काल में होता है किन्तु छन्द शास्त्र में मात्रायें केवल स्वरों की मानी जाती है। जब किसी छन्द के चरण में मात्राओं की गिनती करनी हो तो केवल स्वरों की ही मात्राएं गिनी जाती हैं। **विशेष-** ध्यान रहे, छन्द शास्त्र में वर्ण भी स्वरों को ही माना जाता है। वर्णिक छन्दों में वर्णों की गिनती करते समय केवल स्वरों की ही गणना की जाती है।

मात्राओं के आधार पर स्वरों (वर्णों) के भेद व्याकरण शास्त्र के अनुसार स्वर के दो भेद होते हैं-

1. ह्रस्व स्वर

जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं। हिन्दी में चार ह्रस्व स्वर हैं-अ, इ, उ, ऋ।

2. दीर्घ स्वर

जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्रा अरथात ह्रस्व से दो गुना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं। हिन्दी में 8 दीर्घ स्वर हैं- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

(6) वर्ण वर्ण ध्वनि की मूल इकाई को 'वर्ण' कहते हैं। वर्णों के सुव्यवस्थित समूह या समुदाय को 'वर्णमाला' कहते हैं।
छन्दशास्त्र में वर्ण दो प्रकार के होते हैं-'लघु' और 'गुरु'। छन्दों में मात्राओं तथा वर्णों की गणना तथा वर्णक्रम समझने के लिए लघु-गुरु का ज्ञान बहुत आवश्यक है। निम्नलिखित नियमों पर ध्यान दीजिए-

छंद शास्त्र में वर्ण के दो भाग हैं - लघु वर्ण और गुरु वर्ण

(a) लघु वर्ण

(i) ह्रस्व को छन्द शास्त्र में 'लघु' कहते हैं। लघु वर्ण की एक मात्रा गिनी जाती है।
(ii) यदि किसी दीर्घ स्वर का शीघ्रता में हस्व की तरह उच्चारण किया जाये तो उसे लघु माना जाता है और उसकी एक मात्रा गिनी जाती है।

(b) गुरु वर्ण

(i) दीर्घ स्वर को छन्द शास्त्र में 'गुरु कहते हैं । गुरु वर्ण की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं।
(ii) अनुस्वार (-) तथा विसर्ग (:) सहित स्वर को गुरु माना जाता है, उसकी दो मात्राएँ गिनी जाती है; जैसे-कं, क: आदि।
(iii) संयुक्त व्यंजन (स्वरहीन व्यंजन) से पूर्व का लघु वर्ण भी गुरु माना जाता है और उसकी दो मात्रायें गिनी जाती हैं; जैसे- 'चम्पा' में 'च' और 'कल्याण' में 'क' वर्ण गुरु हैं।
लघु-गुरु चिह्न-लघु वर्ण के लिए '। ' चिह्न तथा गुरु वर्ण के लिए 'S' चिह्न लगाया जाता है। जैसे- क (।) था (S)

(7) संख्या वर्णों और मात्राओं की गणना को संख्या कहते हैं।

(8) क्रम लघु वर्ण तथा गुरु वर्ण के स्थान निर्धारण को क्रम कहते हैं।

(9) गण मात्रिक छन्दों में केवल मात्राओं की संख्या का नियम होता है किन्तु वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या का नियम होता है। इनमें लघु-गुरु व्णों का एक क्रम भी निश्चित रहता है । वर्णों का क्रम गणों के द्वारा सूचित किया जाता है; अत: वर्णिक छन्दों को जानने के लिए पहले गणों का ज्ञान होना आवश्यक है। तीन वर्णों के समूह का एक गण होता है जिनमें लघु 'I ' और गुरु 's' वर्णों का निश्चित क्रम होता है। गण आठ होते हैं। इन गणों के नाम तथा स्वरूप को समझने के निम्नलिखित सूत्र बहुत उपयोगी सिद्ध होगा ।

गण याद करने का सूत्र

सूत्र- ये मा ता रा ज भा न स ल गा'

इस सूत्र में 10 वर्ण हैं। पहले आठ वर्ण गणों के सांकेतिक नाम हैं-

गण - सूत्र - चिह्न - उदाहरण **गणों को याद करने का सूत्र-** नीचे लिखे सूत्र से ऊपर बताये **गणों** का ज्ञान सरलता से किया जा सकता है-

य-मा-ता-रा-ज-भा-न-स-गा

- यगण - यमाता - Iss - बहाना
- मगण - मातारा - sss - आज़ादी
- तगण - ताराज - ssI - बाज़ार
- रगण - राजभा - sIs - नीरजा
- जगण - जभान - IsI - महेश
- भगण - भानस - sII - मानस
- नगण - नसल - III - कमल
- सगण - सलगा - IIs - ममता

अब किसी भी गण के सांकेतिक नाम को लेकर सूत्र में उसके आगे दो और वर्ण जोड़ने पर उसी गण का स्वरूप बन जाता है।

(10) तुक छंद के चरणान्त की अक्षर मैत्री (समान स्वर व्यंजन की स्थापना) को तुक कहते हैं।

तुक दो प्रकार के होते हैं -

(a) तुकांत - तुक वाले छन्दों को तुकांत कहते हैं।

(b) अतुकांत - तुक हीन छन्दों को अतुकांत कहते हैं।

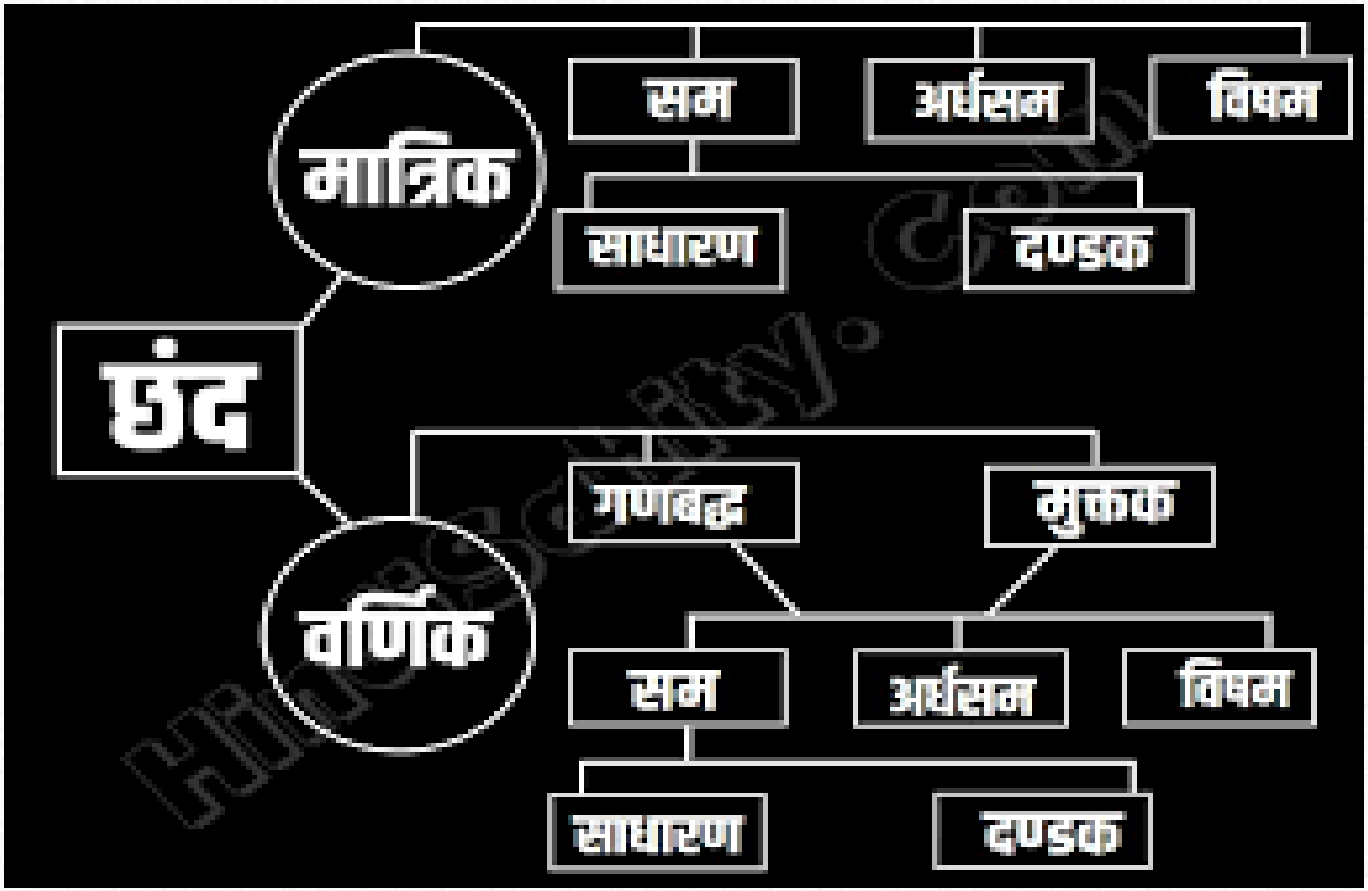
छंद
मात्रिक
सम
अर्धसम
विषम
साधारण
दण्डक
वर्णिक
गणबद्ध
मुक्तक
सम
अर्धसम
विषम
साधारण
दण्डक

छन्दों के भेद-

(1) मात्रिक छंद (2)वर्णिक छंद (3) उभय छंद (4) मुक्तक छंद

(क) मात्रिक छन्द ज़िस छन्द की प्रत्येक पंक्ति (चरण) में मात्राओं की निश्चित संख्या का नियम होता है, उसे मात्रिक छन्द कहते हैं। जैसे दोहा, चौपाई आदि।

(ख) वर्णिक-छन्द जिस छन्द की प्रत्येक पंक्ति (चरण) में वर्णों की निश्चित संख्या का नियम होता है, उसे वर्णिक छन्द कहते हैं। जैसे-इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा आदि।

मात्रिक और वर्णिक छन्दों के तीन-तीन भेद हैं- (क) सम (ख) अर्द्धम (ग) विषम

(क) सम : जिस छन्द के चारों चरणों में मात्राओं और वर्णों की संख्या बराबर होती है। उसे सम कहते हैं। जैसे- चौपाई आदि

(ख) अर्द्ध सम : जिस छन्द के प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या बराबर होती है उसे अर्द्ध सम कहते हैं। जैसे- दोहा, सोरठा, बरवै आदि

(ग) विषम : जिस छन्द में चार से अधिक छः चरण हों तथा प्रत्येक चरण में मात्राओं अथवा वर्णों की संख्या भिन्न हो, उसे विषम कहते हैं। जैसे- छप्पय, कुण्डलियाँ आदि

(ग) उभय छन्द गणों में वर्णों का बँधा होना प्रमुख लक्षण होने के कारण इसे उभय छन्द (वर्णिक वृत्त) कहते हैं। इन छन्दों में मात्रा और वर्ण दोनों की समानता बनी रहती है। जैसे-पल-पल जिसके मैं पथ को देखती थी, निशि-दिन जिसके ही ध्यान में थी बिताती । (वर्णिकवृत्त-मालिनी)

(घ) मुक्तक छन्द

चरणों की अनियमित, असमान, स्वच्छन्द गति और भावानुकूल यति विधान ही मुक्तक छन्द है। इन छन्दों के चरणों में मात्रा अथवा वर्णों की संख्या का कोई नियम नहीं रहता है। इसमें केवल पद्य का प्रवाह अपेक्षित है। पं० सूर्य कान्त त्रिपाठी 'निराला' से लेकर 'नयी कविता' तक हिन्दी कविता में इसका अत्यधिक प्रयोग हुआ है। आधुनिक कविता इसी मुक्तक छन्द में लिखी जा रही है । जैसे- वह तोड़ती पत्थर, देखा मैने उसे, इलाहाबाद में पथ पर (मुक्तक छन्द)

1. चौपाई

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती है।
3. प्रत्येक चरण के अन्त में जगण या तगण आना वर्जित माना जाता है।
4. यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
5. तुक सदैव पहले चरण की दूसरे चरण के साथ व तीसरे की चैथे चरण के साथ मिलती है।

चौपाई छंद के उदाहरण -

धीरज धरम मित्र अरु नारी।
s।। ।।। s। ।। s s
आपद काल परखिए चारी।।
s।। s। ।।।s s s
रघुकुल रीति सदा चलि आई
।।।। s। ।s ।। ss
प्राण जाय पर वचन न जाई
s। s। ।। ।।। । ss
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर,
।। ।।s। s। ।। s।।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।
।। ।s। ।। s। ।s।।
कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि
s।। s।। s।। ।। ।।
कहत लषन सन राम हृदय गुनि
।।। ।।। ।। s। ।।। ।।
राम दूत अतुलित बल धामा,
s। s। ।।।। ।। s s
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।
s।। s। ।।।।। ss

2. दोहा छंद -

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. इसमें विषम (पहले व तीसरे) चरणों में 13-13 मात्राएँ तथा सम (दूसरे व चैथे) चरणों में 11-11 मात्राएँ होती है।
3. इसके विषम चरणों के आरम्भ में जगण वर्जित माना जाता है, जबकि सम चरणों के अंत में एक लघु वर्ण आवश्यक है।
4. यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
5. तुक प्रायः सम चरणों में मिलती है

दोहा छंद के उदाहरण -

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोडो छिटकाय।
।।।। ss s। s || ss ।।s।
टूटे से फिर ना जुडे, जुडे गाँठ पड जाय।।
ss s || s ।s ।s s। || s।
बडा भया तो क्या भया, जैसे पेड खजूर।
।s ।s s s ।s ss s। ।s।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।
ss s ss ।s || ss || s।
हंसा बगुला एक से, रहत सरोवर माँहि।
ss ।।s || s ।।। ।s।। s।
बगुला ढूँढै माछरी, हंसा मोती खाँहि।।
।।s ss s।s ss ss s।
जहां मंथरा की तरह, बसते दासी-दास।
आज्ञा-पालक राम को, मिलता है वनवास।।
छाया माया एक सी, बिरला जाने कोय।
भगता के पीछे फिरे, सन्मुख भागे सोय।।
मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
ss || ss ।s ss s।। s।
जा तन की झांई परे, स्यामु हरित दुति होय।।
s || । ss ।s s। ।।। || s।

3. सोरठा छंद

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. यह दोहा छंद के विपरीत लक्षणों वाला छंद माना जाता है।
3. इसके विषम चरणों में 11-11 मात्राएँ तथा सम चरणों में 13-13 मात्राएँ होती है।
4. सम चरणों के आरम्भ में जगण वर्जित माना जाता है विषम चरणों के अंत में एक लघु वर्ण आवश्यक है।
5. यति प्रत्येक चरण के अंत में होती है।
6. तुक प्रायः सम चरणों में मिलती है

सोरठा छंद के उदाहरण -

जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाहि कहि।
ऽ। ऽ। ।।ऽ। ।। ।। ।।। / ऽ। ।।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे।।

सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलक भर
।।। ।ऽ।। ऽ। ।। ।ऽ। ।। ।।। ।।
सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल
।।। ।ऽ।। ऽ। ।।ऽ ।ऽ ।ऽ। ।।
कपि करि हृदय विचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
।। ।। ।।। ।ऽ। ऽ। ऽ।ऽ ऽ। ।।
जनु असोक अंगार, लीन्हि हरषि उठिकर गहउ।।
।। ।ऽ। ऽऽ। ऽ। ।।। ।।।। ।।।
अस विचार मति धीर, तजि कुतर्क संसय सकल।
भजहु राम रघुवीर, करुनाकर सुन्दर सुखद।।
सुनि कैवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
।। ऽ।। ऽ ऽ। ऽ। ।ऽऽ ।।।ऽ
विहँसे करुणा ऐन, लखन जानकी सहित प्रभु।।
।।ऽ ।।ऽ ऽ। ।।। ऽ।ऽ ।।। ।।
हिम्मत कीमत होय, बिन हिम्मत कीमत नहीं
ऽ।। ऽ।। ऽ। ।। ऽ।। ऽ।। ।ऽ

4 . गीतिका छंद-

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती है।
3. प्रत्येक चरण में अन्त में क्रमशः एक लघु व एक गुरु वर्ण आना आवश्यक है।
4. इसमें यति क्रमशः चौदह व बारह मात्राओं पर होती है।
5. इसमें तुक पहले चरण की दूसरे चरण के साथ व तीसरे चरण की चैथे चरण के साथ मिलती है।

गीतिका छंद उदाहरण - Gitika Chhand ke Udaharan

धर्म के मग में अधर्मों, से कभी डरना नहीं
s। s ।। s ।ss s ।s ।।s ।s
चेतकर चलना कुमारग, में कदम धरना नहीं
s।।। ।।s ।s।। s ।।। ।।s ।s
शुद्ध भावों में भयानक, भावना भरना नहीं
s। ss s ।s।। s।s ।।s ।s
बोध वर्द्धक लेख लिखने, में कमी करना नहीं
s। s।। s। ।।s s ।s ।।s ।s
हे प्रभो आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए,
s ।s ss।ss s। ।।s s।s
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।
s। ss ।ss s s। ।।s s।s
लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें,
s।s ।।s ।।। s ।। ।sss ।s
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर वृतधारी बनें।।
ss।s s।।।। s। ।।ss ।s
यज्ञरूप प्रभो हमारे, भाव निर्मल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये।
वेद की बोले ऋचाएं, सत्य को धारण करे।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर में तरें।
सिद्ध यह सुकरात ईसा, ने किया मरते हुए।
किस तरह से हाथ जलते, हैं हवन करते हुए।।

5. कुण्डलिया छंद

1. यह विषम मात्रिक छंद होता है।
2. यह छंद दोहा व रोला छंदों को मिलाकर बनाया जाता है।
3. इसमें कुल छह चरण होते है।
4. प्रथम दो चरणों में 'दोहा' छंद के लक्षण व अन्तिम चार चरणों में 'रोला' छंद के लक्षण पाये जाते है।
5. 'दोहा' छंद का अन्तिम चरण 'रोला' छंद के प्रथम चरण में दोहराया जाता हैं।
6. यह छंद जिस 'शब्द' से आरम्भ होता है, उसी शब्द से समाप्त किया जाता हैं।
7. इसे गाथा छंद भी कहा जाता है।

कुण्डलिया छंद उदाहरण -

लाठी में गुन बहुत हैं, सदा राखिए संग,
ss s || ||| s |s s|s s|
गहरे नद नाला जहाँ, तहाँ बचावै अंग।
||s || ss |s |s |ss s|
तहाँ बचावै अंग, झपट कुत्ता को मारै,
|s |ss s| ||| ss s ss
दुसमन दावागीर, होय ता हू को झारै।
|||| sss| s| s s s ss
कह गिरधर कविराय, सुनहु हे मेरे बाटी,
|| |||| ||s| ||s s ss ss
सब हथियारन छोड़, हाथ में लीजै लाठी।।
|| ||s|| s| s| s ss ss

बीती ताहिं बिसारि दै, आगे की सुधि लेय
ss s| |s| s ss s || s|
जो बनि आवे सहज में, ताही में चित देय
s || ss ||| s ss s || s|
ताही में चित देय, बात जो ही बनि आवे
ss s || s| s| s s || ss
दुरजन हँसे न कोय, चित्त में खेद न पावे
|||| |s | s| s| s s| | ss
कह गिरधर कविराय, यहै कर मन पर तीती
|| |||| ||s| |s || || || ss
आगे की सुधि लेय, समुझि बीती सो बीती
ss s || s| ||| ss s ss

6. रोला छंद -

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।
3. इसमें यति क्रमशः 11 व 13 मात्राओं पर होती है।
4. इसमें तुक प्रायः दो-दो चरणों में मिलती है।

रोला छंद उदाहरण -

नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।
ss।। ।।s। ।।। ।। ।। s।। s
सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
s। s। ।। ।।। s।s ss।। s
नदियां प्रेम-प्रवाह, फूल-तारा-मण्डल है।
।।s s। ।s। s। ss s।। s
बन्दीजन खगवृंद, शेष फन सिंहासन हैं।।
ss।। ।।s। s। ।। ss।। s
हुआ बाल रवि उदय, कनक नभ किरणै फूटीं।
भरित तिमिर पर परम, प्रभामय बनकर टूटीं।
जगत जगमगा उठा, विभा वसुधा में फैली।
खुली अलौकिक ज्योति-पुंज की मंजुल थैली।।
हे देवी। यह नियम सृष्टि में सदा अटल है,
s ss ।। ।।। s। s ।s ।।। s
रह सकता है वही, सुरक्षित जिसमें बल है।
।। ।।s s ।s ।s।। ।।s ।। s
निर्बल का है नहीं, जगत में कहीं ठिकाना,
s।। s s ।s ।।। s ।s ।ss
रक्षा साधन उसे, प्राप्त हों चाहे नाना।।
ss s।। ।s s। s ss ss
नन्दन वन था जहाँ, वहीं मरूभूमि बनी है।
जहाँ सघन थे वृक्ष, वहाँ दावाग्नि घनी है।।
जहाँ मधुर मालती, सुरभि रहती थी फैली।
फूट रही है आज, वहाँ पर फूट विषैली।।

7 . हरिगीतिका छंद-

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती है।
3. इसमें यति क्रमशः 16 व 12 मात्राओं पर होती है।
4. इसके प्रत्येक चरण में 5वीं, 12वीं, 19वीं, व 26वीं मात्रा लघु होती है।
5. इसके प्रत्येक चरण के अन्त में क्रमशः एक लघु व एक गुरु मात्रा आती है।
6. तुक प्रायः पहले चरण की दूसरे से व तीसरे चरण की चैथे चरण से मिलती है।

हरिगीतिका छंद के उदाहरण

कहती हुई यों उत्तरा के, नेत्र जल से भर गये।
।।s ।s s s।s s s। ।। s ।। ।s
हिम के कणों से पूर्ण मानो, हो गये पंकज नये।।
।। s ।s s s। ss s ।s s।। ।s
लघु लागि विधि की निपुणता, अवलोकि पुर सोभा सही
।। s। ।। s ।।।s ।।s। ।। ss ।s
वन बाग कूप तडाग सरिता, सुभग सब सक को कहीं
।। s। s। ।s। ।।s ।।। ।। ।। s ।s
मंगल विपुल तोरण पताका, केतु गृह गृह सोहहीं
s।। ।।। s।। ।ss s। ।। ।। s।s
वनिता पुरुष सुन्दर चतुर छवि, देखि मुनि मन मोहहीं
।।s ।।। s।। ।।। ।। s। ।। ।। s।s
श्री रामचन्द्रकृपालुभजुमन, हरण भव भय दारुणं।
s s।s। ।s। ।।।। ।।। ।। ।। s।s
नवकंजलोचनकंजमुखकर, कंज पद कंजारुणं।
।।s। s।। s। ।।।। s। ।। ss।s
कन्दर्प अगणित अमित छबि नव, नील नीरद सुन्दरं।
ss। ।।।।। ।।। ।। ।। s। s।। s।s
पटपीत मानहु तडित रुचि शुचि, नौमि जनक सुतावरं।।
।।s। s।। ।।। ।। ।। s। ।।। ।s।s

8. बरवै छंद-

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. इसके विषम चरणों में 12-12 एवं सम चरणों में 7-7 मात्राएँ होती है।
3. इसे 'ध्रुव' व 'कुरंग' छंद के नाम से भी पुकारा जाता है।

बरवै छंद उदाहरण -

वाम अंग शिव शोभित, शिवा उदार।
 s। s। ।। s।। ।s ।s।
सरद सुवारिद में जनु, तडित विहार।।
।।। ।s।। s ।। ।।। ।s।
सबसे मिलकर रह मन, बैर बिसार।
।।s ।।।। ।। ।। s। ।s।
दुर्लभ नर तन पाकर, कर उपकार।।
।s। ।। ।। s।। ।। ।।s।

9. उल्लाला छंद -

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. इसमें यति प्रत्येक चरण के अंत में होती है।
3. इसमें यति प्रत्येक चरण के अंत में होती है।
4. इसमें तुक सदैव सम चरणों में मिलती है।

उल्लाला छंद उदाहरण -

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की
।।s ।।s। ।s। s ।।ss ।। s। s
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की
s s।s। s s। s ।।। s। ss। s
हे शरणदायिनी देवि! तू, करती सबका त्राण है।
s । ।।s।s s। s ।।s ।।s s। s
हे मातृभूमि संतान हम, तू जननी तू प्राण है।।
s s।s। ss। ।। s ।।s s s। s
उसकी विचार धारा, धरा के धर्मों में है वही-
सब सार्वभौम सिद्धान्त, का आदि प्रवर्तक है वही
निर्मल अति मन में सदा, उठता यह उद्गार है
सुगति स्वर्ग-अपवर्ग का, गुरु प्रसाद ही द्वार है

1. इन्द्रवज्रा छंद-

1. यह त्रिष्टुप जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं, जो क्रमशः तगण, तगण, जगण व गुरु-गुरु के रूप में लिखे जाते है।
3. इसमें यति प्रत्येक चरण के अन्त मेंहोती है।

इन्द्रवज्रा छंद उदाहरण -

धन्या मही में शक राजधानी।
माया सशुद्धोधन धन्य धन्या।
धन्या कथा श्री धन जन्म की जो।
धन्या बनाती कवि कीर्ति को भी।

मैं जो नया ग्रंथ विलोकता हूँ,
s s Is s। Is।s s
भाता मुझे वो नव मित्र सा है।
s s Is s ।। s। s s
देखूँ उसे मैं नित सार वाला,
ss Is s ।। s। ss
मानो मिला मीत मुझे पुराना।।
ss Is s। Is Iss

2. वसन्ततिलका छंद-

उक्तावसन्ततिलकातभजाजगौगः

s s । s।।। s । । s। s s

1. यह शक्वरी जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं, जो क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण व गुरु - गुरु के रूप में लिखे जाते है।
3. इसमें यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

वसन्ततिलका छंद उदाहरण -

थे दीखते परम वृद्ध नितान्त रोगी
s s।s ।।। s। ।s। ss
या थी नवागत वधू गृह में दिखाती
s s ।s।। ।s ।। s ।ss
कोई न और इनको तज के कहीं था
ss । s। ।।s ।। s ।s s
सूने सभी सदन गोकुल के हुए थे।
बातें बडी सरस थे कहते बिहारी,
ss ।s ।।। s ।।s ।ss
छोटे बडे सकल का हित चाहते थे।
ss ।s ।।। s ।। s।s s
अत्यन्त प्यार सँग थे मिलते सबों से,
s s। s। ।। s ।।s ।s s
वे थे सहायक बडे दुख के दिनों में ।।
s s ।s।। ।s ।। s ।s s
भू में रमी शरद की कमनीयता थी
नीला अनन्त नभ निर्मल हो गया था
थी छा गई ककुभ में अमिता सितामा
उत्फुल्ल सी प्रकृति थी प्रतिभास होती

3 . मालिनी छंद-

ननमययय्युतेयं मालिनी भोगिलौकेः।

।।।।।। s s s । s s। s s

1. यह अतिशक्करी जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते है, जो क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण, यगण के रूप में लिखे जाते है।
3. इसमें यति क्रमशः आठ व सात वर्णों पर होती है।

मालिनी छंद उदाहरण -

प्रिययति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?

।।।। ।। s s s। s s ।s s

दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?

।। ।। ।। s s s । s s । s s

लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,

।। ।। ।।s s s। s s ।। s

वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है?

।। ।।। ।ss s। ss ।s s

4. मन्दाक्रान्ता छंद -

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मोभनोतौग युग्मम्।

s s s s। । ।।। s s ।s s। s s

1. यह अत्यष्टि जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 17 वर्ण होते हैं, जो क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, व गुरु, गुरु के रूप में लिखे जाते है।
3. इसमें यति क्रमशः चार, छह व सात वर्णों पर होती है।

मन्दाक्रान्ता छंद के उदाहरण - Mandakranta Chhand ke udaharan

तारे डूबे, तम टल गया, छा गई व्योम लाली

ss ss ।। ।। ।s s ।s s। ss

पंछी बोले, तमचुर जगे, ज्योति फैली दिशा में

ss ss ।।।। ।s s। ss ।s s

शाखा डोली, सकल तरु की, कंज फूले सरों में

ss ss ।।। ।s s s। ss ।s s

धीरे धीरे दिनकर कढ़े, तामसी रात बीती

ss ss ।।।। ।s s।s s। ss

जो मैं कोई विहग उड़ता देखती व्योम में हूँ,

तो उत्कण्ठावश विवश हो चित्त में सोचती हूँ।

होते मेरे निबल तन में पक्ष जो पक्षियों के,

तो यों ही मैं समुद उड़ती श्याम के पास जाती।।

s s s s ।।। ।।s s। s s। s s

5. शिखरिणी

1.इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक यगण (।ऽऽ), एक मगण (ऽऽऽ), एक नगण (।।।), एक सगण (।।ऽ), एक भगण (ऽ।।), एक लघु (।) एवं एक गुरु (ऽ) होता है।

2. इसमें 17 वर्ण तथा छः वर्णों पर यति होता है;

जैसे-

।ऽऽ ऽऽ ऽ ।।। ।।ऽ ऽ ।।। ऽ

“अनूठी आभा से, सरस सुषमा से सुरस से।
बना जो देती थी, वह गुणमयी भू विपिन को।।
निराले फूलों की, विविध दल वाली अनुपम।
जड़ी-बूटी हो बहु फलवती थी विलसती।।”

6. भुजंगप्रयातम् छंद-

भुजंगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।

।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

अर्थात्

1. यह जगती जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं, जो क्रमशः चार यगण के रूप में लिखे जाते है।
3. इसमें यति चरण के अन्त में होती है।

भुजंगप्रयातम् छंद उदाहरण - Bhujang Prayat Chhand ke Udaharan

बनाती रसोई सभी को खिलाती
इसी काम में आज मैं तृप्ति पाती
रहा किन्तु मेरे लिए एक रोना
खिलाऊँ किसे मैं अलोना सलोना।
बना लो जहाँ ही वहीं स्वर्ग होगा,
।ऽ ऽ ।ऽऽ । ।ऽ ऽ। ऽऽ
स्वयंभूत थोड़ा कहीं स्वर्ग होगा।
।ऽऽ। ऽऽ ।ऽ ऽ। ऽऽ
भलों के लिए तो यहीं स्वर्ग होगा।।
।ऽ ऽ ।ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽऽ
कभी आँख से आँख तेरी लड़ेगी
कभी कंठ में व्याह-माला पड़ेगी
कभी चित्त की ग्रन्थि की खोज कोई,
तुझे स्थान देगी, मुझे मान देगी।

7. सवैया छंद-

1. यह वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 22 से लेकर 26 तक वर्ण होते हैं।
3. वर्णों की संख्या एवं गणों की प्रकृति के आधार पर इस छंद के ग्यारह भेद किये जाते हैं।

यथा - मदिरा, मालती, सुमुखी, चकोर, दुर्मिल, किरीट, अरसात, अरविंद, सुन्दरी, लवंगलता, कुंदलता सवैया

सवैया के ग्यारह भेद -

''मदिरा मालती सुमुखी, चकोर दुर्मिल किरीट।
अरसात अरविन्द सुन्दरी, लवंगलता कुंदल।।''

ग्यारह भेदों के क्रमानुसार लक्षण

सवैया छंद के उदाहरण -

भस्म लगावत शंकर के अहि लोचन आनि परी झरिकै
ऽऽ ।ऽ।। ऽ।। ऽ ।। ऽ।। ऽ। ।ऽ ।।ऽ
7 भगण + 1 गुरु = मदिरा सवैया

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
ऽ ।।ऽ ।। ऽ।।ऽ ।। ऽ। ।ऽ ।। ऽ ।। ऽऽ
7 भगण + गुरु = मालती सवैया

हिये वनमाल रसाल धरे सिर मोर किरीट महा लसिबो
।ऽ ।।ऽ। ।ऽ। ।ऽ ।। ऽ। ।ऽ। ।ऽ ।।ऽ
7 जगण + 1 लघु + गुरु = सुमुखी सवैया

धन्य वही नर नारि सराहत या छवि काटत जो भव फंद
ऽ। ।ऽ ।। ऽ। ।ऽ।। ऽ ।। ऽ।। ऽ ।। ऽ।
सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहे जहँ एक घटी
।। ऽ। ।ऽ ।। ऽ ।।ऽ ।।ऽ । ।ऽ ।। ऽ। ।ऽ
मानुष हो तु वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव कि ग्वारिन
ऽ।। ऽ । ।ऽ ऽ।ऽ। ।ऽ ।। ऽ।। ऽ। । ऽ।।
8 भगण = किरीट सवैया

अस्वीकरण निम्नलिखित वीडियों विभिन्न पुस्तकों , मीडिया , इंटरनेट अंतरिक्ष , आदि से एकत्र किए गए शोध और केस स्टडीज पर आधारित है । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो में निहित जानकारी की सटीकता , सामग्री , पूर्णता , वैधता या विश्वसनीयता के लिए किसी भी जिम्मेदारी या दायित्व को स्वीकार नहीं करते हैं । वीडियो पूरी तरह से शैक्षिक उद्देश्यों के लिए बनाया गया है और किसी व्यक्ति , व्यक्तियों , संस्था , कंपनी या किसी के शरीर को नुकसान पहुंचाने , चोट पहुंचाने या बदनाम करने के इरादे से नहीं बनाया गया है । इस वीडियो का उद्देश्य किसी भी धर्म , समुदायों या व्यक्तियों की अफवाहों को फैलाना , अपमानित करना या उन्हें चोट पहुंचाना या किसी व्यक्ति (जीवित या मृत) के प्रति असहमति पहुंचाना नहीं है , दर्शक को हमेशा अपना परिश्रम करना चाहिए और जो कोई भी इसमें शामिल होना चाहता है वीडियो में इसके लिए पूरी जिम्मेदारी लेता है । साथ ही , यह उनके स्वयं के जोखिम और परिणामों पर किया जाता है । इस वीडियो में शामिल सामग्री किसी भी क्षेत्र में सेवाओं या प्रशिक्षित पेशेवरों के लिए प्रतिस्थापन या प्रतिस्थापन नहीं कर सकती है , लेकिन वित्तीय , चिकित्सा , मनोवैज्ञानिक या कानूनी मामलों तक सीमित नहीं है । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो पर आधारित किसी भी कार्रवाई के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रत्यक्ष , अप्रत्यक्ष , निहित , दंडात्मक , विशेष , आकस्मिक , या अन्य के लिए जिम्मेदारी नहीं लेते हैं । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और वीडियो के निर्माता किसी भी तरह के परिवाद , निंदा या किसी अन्य प्रकार के दावे या किसी भी प्रकार के दावे को स्वीकार करते हैं । दर्शकों को विवेक की सलाह दी जाती है शर्तें लाग करें ।

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता.गेवराई जि.बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर